Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2024: 8.058
https://www.srjis.com/issues_data/226
PEER REVIEWED, REFEREED & INDEXED JOURNAL DEC-JAN 2024, Vol-12/61
https://doi.org/10.5281/zenodo.10687009

'' माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरूचि पर पारिवारिक पर्यावरण के प्रभाव का अध्ययन ''

शालिनी चोपड़ा एवं प्रो0 डॉ0 एम0पी0 त्रिपाठी

शोधार्थिनी–शिक्षा संकाय, ईमेल–*shalinitandon25@gmail.com*

प्रो0– शिक्षा संकाय, – आर0आर0पी0जी0 कालेज, अमेठी, उ0प्र0।

Paper Received On: 12 December 2023
Peer Reviewed On: 28 January 2024
Published On: 01 February 2024

सारांश

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक रूचि पर पारिवारिक पर्यावरण के प्रभाव को जानने के उद्देश्य से यह शोध अध्ययन किया गया है। इस शोध अध्ययन में कार्योत्तर विधि द्वारा अध्ययन कार्य किया गया। न्यादर्श के रूप में अम्बेडकरनगर जनपद के माध्यमिक स्तर के कक्षा 11 व 12 में अध्ययनरत विद्यार्थियों को चयनित किया गया है। गुच्छ विधि द्वारा 200 विद्यार्थियों को चयनित किया गया। विश्लेषण के परिणाम स्वरूप यह निष्कर्ष निकला कि व्यावसायिक अभिरूचि पर पारिवारिक पर्यावरण का प्रभाव पड़ता है।

मुख्य कीवर्ड– *व्यावसायिक अभिरूचि, पारिवारिक पर्यावरण।*

प्रस्तावना– विश्व के इस विशाल प्रांगण में ईश्वर के वरदान स्वरूप दो ही उपहार दृष्टिगोचर होते हैं– मानव व प्रकृति मानव एक अबोध शिशु के रूप में जन्म लेता है, जिसमें कुछ पार्श्विक एवं कुछ मानवीय प्रवृत्तियां पायी जाती है। शिक्षा के द्वारा इन प्रवृत्तियों का शोधन एवं मार्गान्तीकरण होता है। परिणाम स्वरूप मानव समाज एवं राष्ट्र का एक उपयोगी एवं उत्तम नागरिक बनता है, जिसमें राष्ट्र का गौरव बढ़ता है। शिक्षा विकास

Copyright@2024 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

का वह क्रम होता है, जिसमें मानव शैश्वावस्था से परिपक्वता की ओर अग्रसर होता है। इस क्रम में वह प्राकृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक पर्यावरण के साथ अनुकूलन बनाने की प्रेरणा प्राप्त करता है।

शिक्षा जीवन पर्यत्न चलने वाली सतत प्रक्रिया है, जो बालक के जन्म से लेकर मृत्यु तक अनवरत चलती रहती है। जैसा कि **टी0 रेमण्ट महोदय ने स्पष्ट किया कि–** शिक्षा विकास की वह प्रक्रिया है, जिसमें मनुष्य शैश्वकाल से प्रौढ़काल तक विकास करता है, जिसके द्वारा वह धीरे–धीरे अपने को अनेक प्रकार से अपने प्राकृतिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय वातावरण से अनुकूल बनाता है। माध्यमिक शब्द का अर्थ **मध्य की।** माध्यमिक शिक्षा को प्राथमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा के मध्य की महत्वपूर्ण कड़ी माना जाता है। माध्यमिक शिक्षा अपने में पूर्ण इकाई होती है और बच्चों के निर्माण की शिक्षा होती है माध्यमिक शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य छात्रों का सर्वांगिण विकास करना होता है।

व्यावसायिक शिक्षा–व्यावसायिक शिक्षा वह रोजगापरक शिक्षा है जिसका सीधा सम्बन्ध व्यवसाय से है। यह वह शिक्षा है जो व्यक्ति को किसी कार्य या व्यवसाय से सम्बन्धित प्रशिक्षण प्रदान करती है, ताकि वह उस व्यवसाय के द्वारा अपनी जीविका का उपार्जन कर सके। अतः हम व्यावसायिक शिक्षा के अर्थ को **'' सामाजिक विज्ञानों के विश्वकोषों ''** के अनुसार इस प्रकार परिभाषित कर सकते है कि– **व्यापक रूप से व्यावसायिक शिक्षा के अन्तरित उस सब प्रकार की शिक्षा को सम्मिलित किया जा सकता है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को जीवकोपार्जन के लिए प्रशिक्षण प्राप्त होता है, जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को जीवकोपार्जन के लिए प्रशिक्षण प्राप्त होता है। ''**

व्यावसायिक शिक्षा छात्रों को केवल तकनीकी ज्ञान नहीं प्रदान करती है वरन् छात्रों को इस प्रकार तैयार करती है जिससे वह समाज की आवश्यकताओं को समझते हुए उसके आर्थिक विकास में सक्रिय योगदान कर सकें।

आचार्य नरेन्द्र देव समिति ''(1939) ने व्यावसायिक शिक्षा को परिभाषित करते हुए कहा है कि– '' व्यावसायिक शिक्षा से मेरा अभिप्राय उस शिक्षा एवं प्रशिक्षण से है जो एक नवयुवक को व्यावसाय के प्रति प्रभावी प्रवृत्ति योग्य बनाती है और इसका अभिप्राय उन लोगों से है जो रोजगार के एक विशिष्ट स्वरूप का चयन कर चुके है। ''

व्यावसायिक शिक्षा के उद्देश्य–यूनेस्कों के बारहवें अधिवेशन में व्यावसायिक शिक्षा के निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गये–

1–व्यावसायिक शिक्षा के समस्त कार्यक्रमों में सामान्य वैज्ञानिक एवं विशिष्ट विषयों में समुचित सन्तुलन होना चाहिए।

2–इस शिक्षा से समस्त कार्यक्रम तीव्र गति से विकसित होने वाले शिल्प विज्ञान की प्रकृति के अनुरूप होने चाहिए।

3–इस शिक्षा के कुछ कार्यक्रम ऐसे होने चाहिए जो शारीरिक या मानसिक दृष्टि से दोषपूर्ण व्यक्यिों के लिए उपयुक्त हो ताकि वे समाज एवं व्यावसायों में समायोजित हो जाए।

पारिवारिक वातावरण–बालक के भविष्य निर्माण में उसके पारिवारिक व सामाजिक वातावरण का विशेष महत्व होता है। जन्म से ही बालक पर उसके परिवार का प्रभाव पड़ने लगता है। **पेस्टालॉजी के विचारानुसार–** परिवार प्यार तथा स्नेह का केन्द्र, शिक्षा को सर्वोत्तम स्थान व बालक की प्रथम पाठशाला है।

परिवार की पृष्ठभूमि व वातावरण जैसा होता है, बालक स्वयं को उसी में श्रेष्ठ बनाने को प्रयास करता है। बालक में उत्तम नैतिक, चारित्रिक, मानसिक सांवेगिक, विचारों को विकसित करने का दायित्व परिवार का होता है। बालक की मनोवृत्ति, व आदतों के निर्माण में परिवार की अहम् भूमिका होती है।

परिवार बालक की प्रथम पाठशाला व मां प्रथम शिक्षिका होती है। पारिवारिक वातावरण का विद्यार्थियों के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। परिवार के स्वरूप वातावरण मे बालक का उत्तम सर्वांगीण विकास होता है। प्रस्तुत अध्ययन में पारिवारिक वातावरण का प्रभाव विद्यार्थियों के व्यावसायिक रुचि पर देखनें की आवश्यकता महसूस हुई।

अध्ययन का उद्देश्य –माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं – माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि पर पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

अध्ययन की विधि – प्रस्तुत शोध अध्ययन में कार्योत्तर विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श –प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के रूप में अम्बेडकरनगर जनपद में स्थित माध्यमिक स्तर के कक्षा 11 व 12 में अध्ययनरत विद्यार्थियों को लिया गया। जिसमें से गुंच्छ विधि द्वारा कुल 200 (120 छात्र व 80 छात्राएं) का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया।

उपकरण – प्रस्तुत अध्ययन में निम्न शोध उपकरणों का प्रयोग किया गया–

1–होम इन्वायरमेंट इन्वेटरी डॉ0 करुणा शंकर मिश्र जी द्वारा निर्मित ।

2–व्यावसायिक रुचि प्रपत्र डॉ0 एस0पी0 कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित।

सारणी – *सकारात्मक, सामान्य एवं नकारात्मक पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरूचि*

क्र.स.	व्यवसाय	सकारात्मक पारिवारिक वातावरण	सामान्य पारिवारिक वातावरण	नकारात्मक पारिवारिक वातावरण	कुल योग	प्रतिशत
1.	कृषि		5	20	25	12.5%
2.	कला	5	10	5	20	10%
3.	वाणिज्य	10	10	5	25	12.5%
4.	प्रशासन	15	10	5	30	15%
5.	गृहकार्य		20	15	35	17.5%
6.	साहित्य	10	20	5	35	17.5%
7.		20	5		25	12.5%
8.			0	5	5	2.5%
		60	80	60	200	100%

1– कृषि– उपरोक्त सारिणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि लगभग 12.5% माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी स्तर के विद्यार्थी कृषि व्यवसाय में रुचि रखते हैं। इनमें नकारात्मक पारिवारिक वातावरण के विद्यार्थियों का रूझान अपेक्षाकृत अधिक है।

2–कला–माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में लगभग 10 प्रतिशत कला व्यवसाय के प्रति रुचि रखते है। इनमें सामान्य पारिवारिक वातावरण के प्रति अपेक्षा कृत रूझान अधिक है।

3–सारिणी क अध्ययन से ज्ञात है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में लगभग 12.5 प्रतिशत वाणिज्य व्यवसाय के प्रति रुचि रखते है। इनमें सामान्य पारिवारिक वातावरण के प्रति अपेक्षाकृत अधिक है।

4–माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का प्रशासन व्यवसाय के प्रति लगभग 15 प्रतिशत रुचि रखते है। इनमें सकारात्मक पारिवारिक वातावरण के विद्यार्थियों का रूझान अधिक है।

5– सारणी के अवलोकन के आधार पर ज्ञात हुआ कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का ग्रह व्यवसाय के प्रति लगभग 17.5 प्रशित रुचि रखते हैं। इनमें नकारात्मक पारिवारिक वातावरण के विद्यार्थियों का रूझान अपेक्षाकृत अधिक है।

6–माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में साहित्य व्यवसाय के प्रति लगभग 17.5 प्रतिशत रुचि रखते है। इसमें सामान्य पारिवारिक वातावरण के प्रति रूझान अधिक है।

7–सारिणी के अध्ययन से ज्ञात है कि लगभग 12.5 प्रतिशत माध्यमिक शिक्षा के विद्यार्थियों का वैज्ञानिक व्यवसाय के प्रति रुचि रखते है। इनमें सकारात्मक पारिवारिक वातावरण के विद्यार्थियों का रूझान अपेक्षाकृत अधिक है।

8–सारिणी के अध्ययन से ज्ञात है कि लगभग 25 प्रतिशत माध्यमिक शिक्षा के विद्याार्थियों का सामाजिक कार्यों में रुचि नकारात्मक पारिवारिक वातावरणों के विद्यार्थियों का अपेक्षाकृत रूझान अधिक है।

निष्कर्ष – माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण तथा व्यावसायिक रुचि के अध्ययनोपरान्त यह ज्ञात होता है कि धरेलू कामकाज एवं साहित्य व्यावसाय के प्रति सर्वाधिक आकृष्ट होते है जबकि कृषि, वाणिज्य व्यावसाय हेतु सामान्य रुचि प्रदर्शित करते है उपरोक्त से यह स्पष्ट होता है कि पारिवारिक वातावरण कही न कही व्यावसाय चयन की प्रभावित करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1– गुप्ता एस0पी0 (2017), उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इला0, शारदा पुस्तक भवन।

2– बुच एम0बी0 (1997), सेकेण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, vol-5, नेशनल रिसर्च ट्रेनिंग काउंसिल।

3–मंगल एस0के0 (2009), शिक्षा मनोविज्ञान नई दिल्ली, पी0एच0आई0 लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड

4– आर0 लिंगटन (1977), '' माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का व्यावसायिक अभिरूचि का अध्ययन '' कोलम्बियाः कोलम्बिया विश्वविद्यालय।

5–महन्ती जी0एस0 (1966), '' व्यावसायिक शिक्षा की प्रगति का अध्ययन '' रांची विश्वविद्यालय, पी0एच0डी0।

6–इनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल साइन्सेज वाल्यूम 15 ई0आर0ए0 सेलिगमैन, पृ0सं0 272

7– गवर्नमैन्ट ऑफ इण्डिया 1939, रिपोर्ट ऑफ डि प्राइमरी एण्ड सेकेण्डरी एजूकेशन रिआर्गनाइजेशन कमीटी, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या–65

Cite Your Article as:
SHALINI TANDON & PROF (DR.) M. P. TRIPATHI. (2024). MADHYMIK STAR KE VIDYRTHIYON KE YAVASAYIK ABHIRUCHI PAR PARIVARIK PARYAWARAN KE PRABHAV KA ADHYAN. Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language, 12(61), 165–170. https://doi.org/10.5281/zenodo.10687009